कद्दूवर्गीय सब्जियो की उन्नत खेती

प्रमिला एवं उदित कुमार
उद्यान विभाग, स्नातकोत्तर कृषि महाविद्यालय
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

कद्दूवर्गीय सब्जियाँ गर्मी तथा वर्षा की महत्त्वपूर्ण फसल है। कद्दूवर्गीय सब्जियाँ अपने स्वाद व पोषक तत्त्वों के हिसाब से काफी महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें प्रमुख रूप से प्रोटीन, विटामिन, रेशे व खनिज तत्त्व पाये जाते हैं।

जलवायु : कद्दूवर्गीय सब्जियाँ गर्मी एवं बरसात दोनों में उगाई जाती है। इन सब्जियों की खेती 20–40 से0 तापमान पर अच्छी तरह से की जा सकती है। खीरा को अन्य कद्दूवर्गीय सब्जियों से थोड़ा कम तापमान की आवश्यकता होती है। कद्दूवर्गीय सब्जियाँ पाला एवं आंधी को नहीं क्षेल पाती तथा कम तापमान एवं अधिक आर्द्रता में मादा पुष्प की बढ़वार अच्छी होती है।

मृदा : बलूई एवं बलूई दोमट मिट्टी जिसमें जल निकास की व्यवस्था हो कद्दूवर्गीय सब्जियों के लिए उपयुक्त होती है। मिट्टी का पी.एच. मान 5.8–7.5 तक कद्दूवर्गीय पौधों को उगाने के लिए उपयुक्त होता है।

कद्दूवर्गीय सब्जियों की विभिन्न किस्में व संकर प्रजातियाँ :

खीरा	:	पोईसेट, जापनीज लौंग ग्रीन, पूसा संयोग तथा पूसा उदय, स्ट्रेट ऐट
लौकी	:	पूसा नवीन, पूसा संदेश, पूसा संतुष्टि, पूसा समृद्धि, काशी गंगा, काशी बहार, काशी कोमल, नरेन्द्र रश्मि, पूसा हाइब्रीड–2, पूसा समर, प्रोलिफिक लॉग, पूसा समर, प्रोलिफिक राउन्ड आदि।
नेनुआ	:	राजेन्द्र नेनुआ–1, पूसा चिकनी, पूसा सुप्रिया, पूसा स्नेहा आदि।
झिंगनी	:	पूसा नसदार, सतपुतिया, पूसा नूतन, कोयम्बटूर–1
करेला	:	पूसा दो मौसमी, पूसा विशेष, प्रिया अर्का हरित, एन.डी.वी.–1, पंत करेला–1, कोयम्बटूर लौंग, कल्याणपूर सोना, कल्याणपुर बारामासी और पूसा हाइब्रीड–1
चप्पन कद्दू	:	आस्ट्रेलियन ग्रीन, पैटी पैन, अर्ली येलो, पूसा अलंकार व प्रोलिफिक
कद्दू	:	**राजेन्द्र चमत्कार,** पूसा विश्वास, पूसा विकास, पूसा हाइब्रीड–1 अर्का सुर्यमुखी, अर्का चंदन, काशी हरित आदि।
पेठा	:	अर्का उज्जवल
खरबूजा	:	पूसा मधुरस, दुर्गापूर मधु, हरामधु, पूसा रसराज, पूसा शर्बती।
तरबूज	:	शुगर बेबी, अर्कामानिक, अर्काज्योति, दुर्गापूर केसर और पूसा वेदाना।
टिंड़ा	:	पंजाब टिंडा, अर्का टिंडा
परवल	:	राजेन्द्र परवल–1, राजेन्द्र परवल–2, राजेन्द्र परवल–3, काशी अंलकार, काशी सुफल, स्वर्ण रेखा, स्वर्ण अलौकिक

लगाने की दूरी :कद्दूवर्गीय सब्जियों को पौधा से पौधा 1 मीटर तथा कतार से कतार 1.5 मीटर की दूरी पर लगाते हैं। गर्मी के दिनों में फसलों की बुवाई निश्चित दूरी पर 0.5 मीटर चौड़ी नालियों में करनी चाहिए और वर्षा के मौसम में ऊपर वाले भाग में बुवाई करनी चाहिए। नालियों से वर्षा का अतिरिक्त जल बाहर निकल जाता है। उपरोक्त निश्चित दूरी पर 1 X 1 फीट आकार का गड्ढ़ा बनाकर उसी गड्ढ़े में खाद एवं उर्वरक डालकर बीज की बुवाई करनी चाहिए। बुवाई के बाद जब पौधे जम जाए एवं उनकी लततर बढ़ने लगे तब मचान बना लेना चाहिए। ऐसा करने से सब्जियों में कीड़े मकोड़ों का प्रकोप कम हो जाता है। पौधा का फल लटकने के वजह से फल की वृद्धि अच्छी होती है। मचान के नीचे की भूमि में कम अवधि की अन्य सब्जियाँ जैसे मूली, बोड़ा धनिया, हरी पत्तिदार सब्जियाँ आदि की खेती की जा सकती है जिससे मुख्य फसल के उगाने की सारी लागत निकल आती है और पूरी मुख्य फसल फायदे में आ जाती है। इस तरह से एक साथ दो–दो फसलों की खेती कर अधिक लाभ अर्जित किया जा सकता है।

बुवाई का समय एवं विधि : इस वर्ग की सब्जियों की खेती की बुवाई का सर्वोत्तम समय गर्मी में फरवरी व मार्च तथा बरसात में जून–जूलाई है। अगात फसल के लिए लत्तर वाली सब्जियों की खेती जनवरी के आखिरी सप्ताह में की जाती है। इस सब्जियों की बुवाई से पूर्व प्रत्येक थाले या गड्ढ़े की अच्छी तरह से गुड़ाई व निकाई कर एक स्थान पर 3 से 4 बीज की बुआई करें। बुवाई से पूर्व बीजों को 12 घंटे पानी में फूला लें। उसके पश्चात् बीजों को अंकुरित कर लगाना चाहिए।

पॉली हाउस विधि से अगेती खेती : कद्दूवर्गीय सब्जियों की उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में गर्मी के मौसम के लिए अगेती फसल तैयार करने के लिए पॉली हाउस में जनवरी माह में पौधा तैयार कर लेते हैं। पौधा तैयार करने के लिए 15 X 10 से0मी0 आकार की पॉलीथीन की थैलियों में 1:1:1 मिट्टी, बालू व गोबर की खाद भरकर जल निकास की व्यवस्था हेतु सुये की सहायता से छेद कर लेते हैं। बाद में इन थैलियों में लगभग 1 से0मी0 की गहराई पर बीज बुवाई करके बालू की परत बिछा लेते हैं तथा हजारे की सहायता से पानी लगाते है। लगभग 4 सप्ताह में पौधे खेत में लगाने योग्य हो जाते हैं। जब फरवरी माह में पाला पड़ने का डर समाप्त हो जाए तब पालीथीन काटकर हटाने के बाद पौधे की मिट्टी के साथ खेत में बनी नालियों की मेढ़ पर रोपाई करके पानी लगातें हैं। इस प्रकार लगभग एक से डेढ़ माह बाद अगेती फसल तैयार हो जाती है जिससे अगेती फसल तैयार करके ज्यादा लाभ कमा सकता है।

बीज दर : खीरा–2.2–2.5 कि0ग्रा0, लौकी–4–5 कि0ग्रा0, करेला–6–7 कि0ग्रा0, नेनुआ–5.0–5.5 कि0ग्रा0, चप्पन कद्दू–5–6 कि0ग्रा0, खरबुजा–2.5–3.0 कि0ग्रा0, तरबुज–4.0–5.0 कि0ग्रा0, टिंडा–6–7 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेयर

खाद एवं उर्वरक : कद्दूवर्गीय फसलों में खाद व उर्वरकों का व्यवहार मिट्टी जाँच के बाद संतुलित मात्रा में करना चाहिए। खाद व उर्वरकों के व्यवहार का समय सबसे अच्छा बुआई से पूर्व का होता है।

प्रमुख कीट :

कद्दू लाल भृंग :

(1) कद्दू लाल भृंग : कीट के पीठ का रंग नारंगी, लाल तथा अधर भाग का रंग काला होता है। मादा कीट 250–300 तक अंडे दे सकती है। इसके शिशु कीट जड़ को तथा व्यस्क कीट पत्तियों एवं फूलों को हानि पहुँचाते हैं।

प्रबंधन :

- फसल कटने के बाद खेत की गहरी जुताई कर दें, जिससे शिशु का सफाया हो सके।
- मालाथियॉन 5 प्रतिशत धूल या फेनवेलरेट 0.4 धूल का 25 कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से सुबह में भुरकाव करें।

(2) फल मक्खी : यह घरेलू मक्खी की तरह दिखने वाला भूरे रंग का कीट है। मादा फलों के अन्दर 8–10 अंडे देती है। इन अन्डों से पिल्लू निकलकर अन्दर ही अन्दर फलों को खाते हैं, जिससे फल खाने लायक नहीं रह जाते हैं।

प्रबंधन :

- सभी आक्रांत फलों को चुनकर नष्ट कर दें।
- प्रति हेक्टेयर 8–10 फल मक्खी फेरोमोन प्रपंच ट्रैप का इस्तेमाल करें।
- रासायनिक उपचार के लिए मालाथियान 50 ई.सी. 1.5 मि.ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

नेनुआ के प्रमुख कीट :

(1) फल मक्खी : यह सब्जियों को क्षति पहुँचाने वाला प्रमुख कीट है। घरेलू मक्खी की तरह दिखाई देने वाली भूरे रंग की होती है। मादा कीट फलों के अन्दर अंडे देती है, जिससे पिल्लू निकल कर फलों के गुदे को खाता है, जिसके कारण फल सड़ जाता है।

प्रबंधन :

- कद्दू में फल मक्खी कीट की तरह।

करेला के प्रमुख कीट :

(1) फलमक्खी : यह करेला का एक महत्त्वपूर्ण कीट है जो घरेलू मक्खी की तरह दिखने वाला भूरे रंग का होता है। इसकी मादा फलों के अन्दर अंडे देती है। अंडे से पिल्लू निकलकर अन्दर ही अन्दर फलों के भीतरी भाग को खाता है जिसके कारण फल नष्ट हो जाता है।

प्रबंधन : कद्दू में फल मक्खी कीट की तरह।

परवल के प्रमुख कीट :

(1) लाल भृंग : परवल में पत्ती बनने के समय इस कीट का आक्रमण होता है। कीट पत्तियों को खाकर नष्ट कर देता है जिससे पौधे मर जाते हैं।

प्रबंधन :

- नये पौधों के पत्तों पर राख में किरासन तेल मिलाकर सुबह में भुरकाव करें।
- मालाथियान 5 प्रतिशत धूल या क्वीनलफास 1.5 धूल का 25 कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से पौधों पर भुरकाव करें।

(2) फल मक्खी : मुलायम फलों की त्वचा के अन्दर फलमक्खी की मादा कीट अंडे देती है। अण्डे से कीट के पिल्लू निकलकर फलों के गूदे को खाता है, जिससे बाद में फल सड़ जाता है।

प्रबंधन :

- कद्दू में फल मक्खी कीट की तरह।

प्रमुख रोग :

लत्तीदार सब्जियों में एन्थ्राकनोज, मोजैक, पर्णदाग एवं जड़–गलन नामक बीमारी मुख्य रूप से लगती है। एन्थ्रोकनोज की बिमारी में पत्तियों एवं तनों पर धब्बे हो जाते हैं जिससे ये काले पड़ जाते हैं। इस रोग से बचने के लिए इमीसान–6 का 2.0 ग्राम अथवा बैविस्टीन 1.0 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करके ही बीज बोना चाहिए। खड़ी फसल में लगे रोगों से बचाव के लिये मेंकोजेब नामक फफूँदनाशक दवा 1.5 ग्राम प्रति ली. की दर से घोल बनाकर पौधों पर छिड़काव करना चाहिए। मोजैक नामक बीमारी में पत्ते सिकुड़ जाते हैं। इसके नियंत्रण के लिए प्रतिरोधी किस्मों को लगाना चाहिये। यह विषाणु जनित रोग है। जिसका फैलाव कीड़ों द्वारा होता है। इसके लिये कीटनाशी दवा के व्यवहार से इस रोग को कम किया जा सकता है। पर्णदाग बीमारी में पत्तियों पर गहरे भूरे धब्बे हो जाते हैं और पत्तियाँ बाद में सूख जाती हैं। इसके निदान हेतु रिडोमिल 1.0–1.5 ग्राम या मेटलॉक्सील फफूँद नाशक 1.5 ग्राम दवा प्रति ली. पानी में घोल बनाकर पौधों पर कम से कम दो छिडकाव करना चाहिये। इससे रोगों से बचाव हो जाता है।